नट समुदाय के सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर धर्मांतरण का प्रभाव: उत्तर प्रदेश, जिला गाजीपुर के विशेष संदर्भ में

विजय कुमार कन्नौजिया*

*Assistant Professor, Department of Sociology, Shri Mahanth Ramashray Das P. G. College, Bhudkuda, Ghazipur (U. P.), India
Email- bhuvijay2@gmail.com
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19463890
Received on: 24/02/2026 Accepted on: 29/03/2026 Published on: 08/04/2026

सारांश:

सांप्रदायिक सद्भाव और पंथनिरपेक्षता भारत के अभिन्न अंग है। परंतु वर्तमान में धार्मिक पुनरुत्थानवाद और सांप्रदायिक भावना देश को जकड़ रही है जिससे धर्मांतरण एक संवेदनशील मुद्दा बन गया है। हालांकि भारतीय समाज में धर्मांतरण कोई नई बात नहीं है। ऐसा माना जाता है कि सामाजिक समानता के लिए निम्न जातियाँ धर्मांतरित होने के लिए विवश रही हैं। समकालीन भारत में धार्मिक परिवर्तन शिक्षाविदों, राजनेताओं और मीडिया के बीच बहस का विषय बन गया है। धर्मांतरण की घटना के साथ कई प्रस्ताव, विवाद और स्पष्टीकरण सामने आए हैं। हालांकि भारत में सामाजिक वैज्ञानिकों ने धर्मांतरण की घटनाओं पर कम ही ध्यान दिया है। सामाजिक समानता के लिए अपने लंबे संघर्ष में देश के दलितों और अछूतों ने हिन्दू धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों को ग्रहण किया। उन्होंने धर्मांतरण इसलिए किया कि हिन्दू धर्म में व्याप्त जाति आधारित छुआछूत से मुक्ति मिलेगी जिससे उनका सामाजिक जीवन पहले की अपेक्षा बेहतर होगा। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश की 'नट' जाति भी धर्मांतरण के प्रक्रिया से गुजर रही है। नट जाति प्रारंभ में हिन्दू थी लेकिन वर्तमान में उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में मुस्लिम नट जाति की बहुलता हुई है। शुरुआत में नट जाति इस्लाम धर्म अपनाने के बावजूद भी अपने अधिकतर धार्मिक क्रियाकलाप हिन्दू रीति-रिवाज से संपन्न करते हैं, लेकिन अब इनके धार्मिक स्वरूप में बदलाव देखने को मिल रहा है। नट जाति सामाजिक भेदभाव के कारण हिन्दू धर्म को छोड़कर इस्लाम धर्म स्वीकार कर रहीं हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में "नट समुदाय के सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर धर्मांतरण का प्रभाव" के अंतर्गत यह समझने का प्रयास किया गया है कि नट जाति में किन-किन कारणों से धर्मांतरण हुए हैं। धर्मांतरण के पश्चात इनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति कैसी है?

मुख्य शब्द: *नट जाति, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति और धर्मांतरण।*

प्रस्तवाना:

भारत में धर्म एक जटिल परिघटना है। प्रारंभिक काल से ही धर्म ने भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धर्म के साथ जुड़े लोगों ने विभिन्न समूहों के संबंध में कई शब्दावली निर्मित करने के साथ-साथ बहु-धार्मिक समाज भी रहा है। जिसमें धर्म कभी स्थिर नहीं रहा है। समय-समय पर बौद्धिक और सामाजिक स्तर में बदलाव के साथ भिन्न-भिन्न धर्मों में परिवर्तन हुए हैं। भारत के इतिहास में धर्मांतरण के धार्मिक आंदोलनों और धार्मिक परिवर्तन के कई मामलों को देखा गया है। जहाँ पर सामाजिक-धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की एक स्थायी विशेषता रही है। ऐतिहासिक रूप से कई अध्ययनों ने यह साबित किया है कि, धर्मांतरण भारतीय परंपरा का हिस्सा है (मिचेल और राज, 1998)। सामाजिक समानता के लिए अपने लंबे संघर्ष में देश के दलितों और अछूतों ने हिन्दू धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों को ग्रहण किया। उन्होंने धर्मांतरण यह समझते हुए किया कि हिन्दू धर्म में व्याप्त जाति आधारित छुआछूत जैसी समस्याओं से उन्हें मुक्ति मिलेगी जिससे उनका सामाजिक जीवन पहले की अपेक्षा बेहतर होगा। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश की 'नट' जाति भी धर्मांतरण के प्रक्रीया से गुजर रही है।

नट जाति:

नट जाति को उत्तर भारत की हिंदू धर्म मानने वाली एक अनुसूचित जाति माना गया है। नट जाति के पुरुष प्राय: बाजीगरी, कलाबाजी और गाने-बजाने का कार्य करते हैं, जबकि स्त्रियाँ नाचने-गाने का कार्य करती हैं। नट का शाब्दिक अर्थ नृत्य या नाटक (अभिनय) करना है। नट नाम संस्कृत के शब्द 'नाटा' (नर्तक) से लिया गया है, जो उनके कलाबाजी कौशल व दक्षता आदि पारंपरिक गतिविधियों से जुड़ा शब्द है। संभवत: इस जाति के लोगों को इसी कौशल दक्षता के कारण उन्हें समाज ने 'नट' नाम दिया होगा। कहीं-कहीं इन्हें 'बाज़ीगरी, कलाबाज' भी कहते हैं। शरीर के अंग-प्रत्यंग को लचीला बनाकर विभिन्न मुद्राओं में अपने कला को प्रदर्शित करते हुए जनता का मनोरंजन करना इनका मुख्य पेशा रहा है। इनकी स्त्रियाँ सुंदर होने के साथ-साथ हाव-भाव प्रदर्शन, नृत्य व गायन में काफी प्रवीण मानी जाती है। नट जाति की प्रमुख दो उपजातियाँ- *बजनियां नट और ब्रज़वासी नट* है (विश्वकोश 2016)।

बजनिया नट:

बजनिया नट को यह नाम कलाबाज हिंदी शब्द 'बजाना' से मिला है, जिसका अर्थ है संगीत, वाद्ययंत्र बजाना। पारंपरिक रूप से ये कलाबाजी और खेल तमाशा दिखाने का कार्य करते थे। बजनिया नट एक खानाबदोश समुदाय है, जो

गाँवों के अंतिम छोर पर शिविरों का निर्माण करते थे और इन्हीं शिविरों में निवास करते थे। नट जाति को पाँच समूहों में विभाजित किया गया है। इनके नाम 'करनट', 'कलाबाज', 'ठाकुर' नट, 'कबूतर भानमाता' या 'चमार नट' और 'मुस्लिम नट' है। ये व्यावहारिक रूप से एक अलग और विशिष्ट समुदाय के रूप में जाने जाते हैं। इन सभी उप-समूहों के लोग एक विशेष व्यवसाय से जुड़े हुए थे। 'करनट' गायक थे, जबकि कलाबाज कलाबाजी व खेल तमाशा के कार्यों से तथा किसी अन्य पेशों से जुड़े हुए थे। उत्तर प्रदेश में बजनिया नट का पारंपरिक व्यवसाय कलाबाज, बाजीगर और गायकी जिससे गाँवों में लोगों का मनोरंजन करते थे।

ब्रजबासी नट:

'ब्रजबासी' नट का नाम उनके आलंकारिक नाम 'बृज' के कारण पड़ा जो मथुरा से संबंध रखते हैं। ब्रजवासी नट उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद, शाहजहाँपुर, हरदोई, बरेली, बदायूँ, मैनपुरी, इटावा और आगरा तथा अन्य जनपदों में पाए जाते हैं। 'ब्रजवासी' नट हिंदू धर्म को मानते हैं। ये लोग मुख्यतः ब्रजभाषा बोलते हैं। ब्रजवासी नटों का पेशा संगीत के साथ ही नृत्य था। वर्तमान में ब्रजबासी नट मुख्य रूप से एक भूमिहीन जाति है, जो मजदूरी करके अपना पालन पोषण कर रहे हैं।

साहित्य पुनरावलोकन:

प्रस्तुत शोध पत्र से संबंधित साहित्य समीक्षा की गयी है, जिसमें नट जाति और उनके सामाजिक-आर्थिक जीवन तथा धर्मांतरण को सम्मिलित करते हुए धर्मांतरण एवं नट जाति से संबंधित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय अध्ययनों का समावेश किया गया है। फुगेल (1945) ने धर्मांतरण का मनो-विश्लेषणात्मक अध्ययन कर बताया है कि किसी भी समाज में धर्मांतरण अचानक से तभी होता है जब उन पर शोषण, दमन जैसे व्यवहार अपनाए जाते हैं। वे बताते हैं कि धर्मांतरण कभी-कभी दमित समाज के लोगों के सामाजिक भावनाओं की आजादी को दर्शाता है। अलेक्जेंडर (1968) ने केरला के अनुसूचित जाति का अध्ययन किया और बताया कि सीरियाई ईसाई और धर्मांतरित हुए ईसाई समूहों के बीच भोजन संबंधी किसी भी प्रकार का भेदभाव तो नहीं है लेकिन धर्मांतरित हुए ईसाइयों को शादी या बपतिस्मा जैसे सामाजिक कार्यों में मेहमान के रूप में आमंत्रित नहीं किया जाता। मैंडलबाम (1972) ने धर्मांतरण आंदोलन पर चर्चा करते हुए बताया है कि धर्मांतरण और आंतरिक विकास के अनुकूल होने के लिए सभी जटिल समाज के लोग पहले या बाद में अपने सामाजिक समूहों को पुनर्व्यवस्थित करते हैं। अलेक्जेंडर (1977) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि धर्मांतरण के बाद भी, निचली जाति के धर्मान्तरित लोगों को हरिजन के रूप में ही माना जाता रहा है। भले ही पूर्व जाति को कानूनी तौर पर हरिजन या अछूत माना जाता था परंतु धर्मांतरण के पश्चात भी उन्हें निचले पायदान पर ही रखा जाता है। फिले (1983) गरीब और सामाजिक रूप से अस्थिर

भारतीयों के बीच धर्मांतरण के सांख्यिकीय साक्ष्य को उद्धृत करते हुए बताया कि जहाँ हिंदू धर्म से धर्मांतरण उच्च स्तर पर था वहीं अधिक संपन्न क्षेत्रों में धर्मांतरण बहुत निम्न था। किम (2003) ने बताया है कि धर्मांतरण निचली जाति को सुरक्षित करता है। धर्मांतरण को ईसाई धर्म एक सिद्धांत मानता है, जो स्वतंत्रता के लिए एक व्यक्तिगत मानवाधिकार है। वहीं आजादी के बाद भारत में हिंदुओं ने तर्क दिया कि धर्मपरिवर्तन हिंदू राष्ट्रवाद की अस्वीकृति और ईसाई धर्म की एक अमानवीय समस्या है।

गांधी जी (1954) ने धर्मांतरण का घोर विरोध किया है। वे कहते हैं कि हरिजनों के धर्म परिवर्तन के बाद भी उनकी सामाजिक स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ेगा बल्कि वहाँ भी वे अछूत बने रहेंगे। उनका यह भी मानना था कि जिस समय अस्पृश्यता हिंदू समाज से पूरी तरह से गायब हो जाएगा। वहाँ से धर्मांतरण भी स्वतः समाप्त हो जाएगा। कुमारप्पा (1945) ने धोखाधड़ी और बल के माध्यम से कराए गए धर्मांतरण की कड़ी निंदा की है। वे बताते हैं कि धर्मांतरण को "आध्यात्मिक परिवर्तन" के रूप में या "समुदाय के परिवर्तन" के रूप में नहीं माना जा सकता है। अम्बेडकर (1956) वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था के खिलाफ थे। इसलिए उन्होंने जोर देकर बार-बार याद दिलाया कि ऐसी सामाजिक एवं मानसिक स्थिति राष्ट्रनिर्माण कि प्रक्रिया को अवरुद्ध करेगी। राव (1982) ने हिन्दू धर्म से गैर-हिंदू धर्मों और इस्लाम में धर्मांतरित को धर्मांतरण मानते हैं। इनका मानना है कि धर्मांतरण के पश्चात अछूतों को जाति व्यवस्था के अत्याचार से मुक्ति के साथ-साथ आत्म-सम्मान भी मिला है। वहीं त्रिपाठी (1994) बताते हैं कि समाज में जब धर्म का गठन हुआ तभी से धर्मांतरण होता आ रहा है। धर्मांतरण अगर न हो, तो समाज में किसी नये धर्म का विस्तार ही न हो। एंटनी राज (2001) ने आंध्र प्रदेश के अनुसूचित जाति और धर्मांतरित अनुसूचित जाति के संदर्भ में बताया है कि अपने मूल धर्म को छोड़कर ईसाई होने बाद इन लोगों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ा है। यह कोई मिथक नहीं बल्कि एक वास्तविकता है। पी एन सिंह (2009) बताते हैं कि अपनी सामाजिक मुक्ति के लिए भारतीय शूद्र कभी बौद्ध बना, फिर मध्य युग में मुसलमान बनने लगा, सिख बना, इंग्लैंड के राजनीतिक वर्चस्व के बाद ईसाई बना और अम्बेडकरवादी हस्तक्षेप के बाद अब वह पुनः बौद्ध धर्म की ओर उन्मुख है। रसेल और हीरालाल (1916) ने नट जाति के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, रहन-सहन आदि स्थितियों का वर्णन किया है। क्रूक (1896) ने भारत की अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के जीवन व साथ ही नट जाति की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं सहित इनकी कला विधाओं का वर्णन किया है। दइया (2002) ने कई ऐसी जातियों का जिक्र किया है, जो सांस्कृतिक लोक-कलाओं से संबंध रखती हैं जिसमें नट जाति भी शामिल है। इन्होंने इनका संक्षिप्त वर्णन करने के साथ ही उनकी लोक-कलाओं को भी वर्णित किया है। उपाध्याय (2015) ने उत्तर प्रदेश राज्य जनपद मिर्जापुर के नट जाति के बारे में बताते हैं कि उनकी जीवन शैली में थोड़ा-बहुत परिवर्तन देखने को मिला है। वे अपने पारंपरिक व्यवसाय और सांस्कृतिक

पहचान अब धीरे-धीरे खो रहे हैं और जीविकोपार्जन के लिए ही संघर्ष कर रहे हैं। वे बताते हैं कि सरकार द्वारा संचालित योजनाओं में इनकी भागीदारी भी बिल्कुल नगण्य है। रेहमान (2016) ने अपने अध्ययन में बताया कि नट जाति की महिलाओं का वेश्यावृत्ति से बहुत पुराना व गहरा नाता रहा है, जो आज के समय में भी है। काफी अस्त-व्यस्त जीवन होने के कारण इनको सामाजिक-आर्थिक दयनीयता का सामना करना पड़ता है। इस कारण भी उन्हें वेश्यावृत्ति को अपनाने के लिए विवश होना पड़ता है। आलम (2018) ने मुस्लिम नट के सामाजिक स्थिति, असमानता, सामाजिक बहिष्करण, बुनियादी सुविधाओं और गरीबी पर चर्चा करते हुए यह बताते हैं कि वे धार्मिक यातनाओं, गरीबी, सामाजिक बदहाली आदि कारणों से हिन्दू से मुस्लिम नट में रूपांतरित हुए है।

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट है कि नट जाति में धर्मांतरण सामाजिक-आर्थिक दमन, शोषण और अस्पृश्यता से प्रेरित रहा है। फुगेल, अलेक्जेंडर, फिले जैसे विद्वानों ने इसे दमित वर्गों की मुक्ति के रूप में देखा, जबकि गांधीजी-अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था की जड़ों पर प्रहार माना। नटों के संदर्भ में आलम (2018) का मुस्लिम रूपांतरण गरीबी-बहिष्कार से जुड़ा विश्लेषण महत्वपूर्ण है, जो रेहमान (2016) की वेश्यावृत्ति-जन्य विवशता से मेल खाता है। उपाध्याय (2015) ने सरकारी योजनाओं की नगण्य भागीदारी उजागर की। अंतरराष्ट्रीय अध्ययन (किम, मैंडलबाम) धर्मांतरण को अधिकार मानते हैं, किंतु भारतीय संदर्भ में यह सामाजिक पुनर्व्यवस्था का साधन है। निष्कर्षत: नटों का धर्मांतरण जाति-आधारित असमानता का प्रतिफल है, जो नीति-हस्तक्षेप हेतु नई दृष्टि प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

यह शोध कार्य उत्तर प्रदेश, जनपद गाजीपुर में निवास कर रहे धर्मांतरित नटों कि सामाजिक आर्थिक पर मुख्य रूप से केंद्रित है। इसके उद्देश्य निम्नलिखित है-

- नट समुदाय में धर्मांतरण के प्रमुख कारणों को ज्ञात करना।
- धर्मांतरित नट समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।
- नट समुदाय के सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर धर्मांतरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिसीमन:

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद के जेवल, सोन्हौली, कुसुम्ही खुर्द और बसुका ग्राम तक सीमित है।

शोध प्रविधि: प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। जिसमें प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों शोध विधियों का उपयोग किया गया है। अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

प्रतिदर्श का चयन: प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श का चयन के सोद्देश्य निदर्शन विधि का उपयोग किया गया।

शोध उपकरण- प्रस्तुत शोध में अर्द्ध संरचित साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन का प्रयोग किया गया है।

नट जाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति:

नट जाति प्रारंभ में यायावरी, ख़ानाबदोश व घुमक्कड़ी जीवन जीते रहे थे। इनका कोई अपना स्थायी निवास नहीं होता था। गाँव के अंतिम हिस्सों या बाहरी हिस्सों में *'डेरा'* आदि डालकर निवास करते थे। अपनी मूलभूत आवश्यकता के पूर्ति हेतु अनेकों कार्य जैसे कलाबाजी, बाजीगरी (सर्कस दिखाने वाला) और गायकी, रस्सी पर स्त्रियों द्वारा नृत्य करना, भिक्षावृत्ति और वेश्यावृत्ति आदि कार्य करते थे। इससे गाँव की जनता के मनोरंजन होने के साथ-साथ नटों की आर्थिक पूर्ति भी होती थी। वर्तमान समय में आधुनिक मनोरंजन की वस्तुओं के बढ़ोत्तरी हो जाने के कारण इन लोगों के पारंपरिक व्यवसायों में भारी गिरावट आयी है। जिसके फलस्वरूप नटों की आर्थिक स्थिति अत्यधिक कमजोर हुई। नटों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पहले से ही कमजोर रही है, जिससे इन लोगों को अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। नट जाति ने अपनी जीविका के लिए परिवार के सभी सदस्य कोई न कोई पेशा अपनाए हुए हैं।

आरंभिक काल में नट जाति अपनी आर्थिक आपूर्ति के लिए वनाश्रित अर्थव्यवस्था पर निर्भर थे। वे गाँव से दूर जंगलों में डेरा डालकर रहते थे और वनों से खाद्य संकलन हेतु फल-फूल, जड़ी-बूटी और शहद एकत्रित करते तथा बाँस से टोकरी और डलिया बनाते थे। जड़ी-बूटी को दवा (दवाई) के रूप में उपयोग करना और साथ-साथ शहर व गाँव में फेरी लगाकर वस्तुओं को बेचना इनका मुख्य व्यवसाय था। अध्ययन क्षेत्र जेवल, सोन्हौली, कुसुम्ही खुर्द और बसुका गाँव के नट जाति अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए श्रम करते हैं। जेवल, सोन्हौली और कुसुम्ही खुर्द ग्राम में अधिकांश नट जाति के लोग पशुओं का व्यापार, भिक्षावृत्ति, महिलाओं द्वारा गोदना गोदने का कार्य, नाच-गाने का कार्यक्रम और कृषि एवं मजदूरी आदि कार्यों से जुड़े हुए हैं, जबकि बसुका ग्राम में नट जाति की महिलाएँ वेश्यावृत्ति के पेशे से भी जुड़ी हुई हैं। नटों के पास कृषि कार्य करने के लिए इनकी स्वयं की भूमि नहीं है। ये लोग अन्य भूस्वामित्व पर आश्रित हैं। भूमि नहीं होने के कारण जमींदारों के खेतों में कृषि कार्य करते हैं। क्षेत्र अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकतर नट जाति व उनके परिवार के लोगों का जीविकोपार्जन दैनिक मजदूरी पर निर्भर है। मजदूरी के रूप में कृषि कार्य, घर निर्माण में कार्य करना, मिट्टी ढोना और लकड़ी काटना आदि अनेकों कार्य करते हैं। अर्थात् कोई भी कार्य मिल जाए उसे कर लेते हैं। मजदूरी के कार्य में परिवार के सभी सदस्यों के साथ महिलाएं लगी होती है।

भिक्षावृत्ति (भीख माँगना) नट जाति का पारंपरिक पेशा रहा है, जो वर्तमान में भी प्रचलित है। अध्ययन क्षेत्र में नट जाति आज भी भिक्षावृत्ति (भीख माँगने) का कार्य करते हुए पाए गए। जेवल ग्राम और कुसुम्ही खुर्द ग्राम में नटों द्वारा भीख माँगने

का कार्य अधिक प्रचलन में है। अध्ययन क्षेत्र में अवलोकन के उपरांत यह ज्ञात हुआ कि आर्थिक आपूर्ति के लिए नटों का परिवार भिक्षावृत्ति पर आश्रित है। भीख माँगने का कार्य महिलाओं द्वारा किया जाता है, जिसमें वृद्ध महिलाएँ भी शामिल हैं, जबकि कुसुम्ही खुर्द ग्राम में अध्ययन के दौरान यह पता चला कि यहाँ के नट जाति अपने आपको केवट बताकर (गंगा गीत गाकर) भीख माँगने के साथ-साथ कुछ जड़ी बूटियाँ को बेचने का कार्य करते हैं। हालाँकि कुछ महिलाएँ श्रृंगार की वस्तुएँ भी बेचती हुई पायी गई है। श्रृंगार सामग्री बेचने वाली महिला का कहना है कि कभी-कभी श्रृंगार की सामग्री की विक्रय नहीं होने की स्थिति में जीविकोपार्जन के लिए भिक्षावृत्ति करना मजबूरी होती है। अध्ययन क्षेत्र से ज्ञात हुआ कि वेश्यावृत्ति कार्य में बसुका ग्राम की महिलाएँ संलिप्त है। बसुका ग्राम में वेश्याओं के नाचने-गाने की परंपरा काफी प्राचीन रही है। इस ग्राम को पूरे पूर्वांचल में वेश्यावृत्ति के लिए जाना जाता था। प्रारंभ में यह माना जाता हैं कि इन वेश्याओं के नाच देखने व मुजरा सुनने के लिए आने वाले रईसों व जमींदारो का इतिहास रहा है, लेकिन वर्तमान समय में आधुनिकता के कारण आज यह चलन धीरे-धीरे समाप्ति की ओर अग्रसर है। बसुका ग्राम के नट जाति के वृद्ध व्यक्तियों से चर्चा के दौरान पता चला कि इस गाँव के लोग नाच-गाना तथा वेश्याओं के नाम से जाने जाते थे। रईसजादे व जमींदार इन तवायफें के यहाँ नाच व मुजरा का आनंद लेने आते थे और तवायफें अपने हुनर से रईसजादों का दिल बहलाया करती थीं और बदले में रईसजादे उनका आर्थिक खर्च उठाया करते थे। किंतु समय परिवर्तित होने के साथ-साथ वेश्याओं की रवायतों में भी परिवर्तन आया और इनके खर्च उठाने वाले व इनका नाच-गाना देखने वाले रईसों में धीरे-धीरे कमी आ गई। वर्तमान समय में बसुका ग्राम के नट जाति की आर्थिक स्थिति ठीक तो है परंतु इस पेशा के कारण इनके सामाजिक स्थिति में गिरावट या भेदभाव देखने को मिला हैं।

नट जाति का धार्मिक जीवन:

नट जाति भारत की प्राचीन घुमंतू और कलात्मक जातियों में से एक मानी जाती है इनके सामाजिक- सांस्कृतिक जीवन में धर्म और परंपरा का गहरा संबंध है। धार्मिक जीवन नटों के लोकाचार, त्योहार, देवी- देवताओं की पूजा और अनुष्ठानों में स्पष्ट दिखाई देता है। पीपुल ग्रुप्स ऑफ इंडिया (17 अगस्त 2018 अभिगमन) के अनुसार नट जाति आरंभ में हिंदू थे लेकिन उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में मुस्लिम नटों की बहुलता है। हिंदू नट सभी हिंदू देवी-देवताओं में भगवान राम और शिव की पूजा-अर्चना करते हैं। बिहार में नट अपने मुख्य देवता के रूप में 'डैक' की पूजा करते हैं, जबकि उनके स्थानीय देवता 'गोराबाबा' हैं। पश्चिम बंगाल में रहने वाले अधिकांश नट जाति के लोग वैष्णव धर्म का पालन करते हैं और विष्णु को अपना मुख्य देवता मानते हैं। नट कृष्ण (विष्णु के आठवें अवतार), उनकी प्यारी राधा और लक्ष्मी (धन की देवी) को भी पूजते हैं। दिल्ली और हरियाणा में नट जाति कालकाजी (काली का एक रूप, शिव की पत्नी) की पूजा करते हैं। मुस्लिम नट इस्लाम को (मुस्लिम धर्म) मानते हैं। खुदा या अल्लाह के सिवा किसी और इष्ट-पूज्य पर विश्वास नहीं

करते हैं। इस्लाम धर्म की पवित्र पुस्तक 'कुरान' और उसके वाणी का अनुसरण धर्म और विचारधारा को अपनाते हैं। विभिन्न धार्मिक अवसरों पर वे विभिन्न स्थलों जैसे पिरों, दरगाह, मजार और पवित्र मंदिरों के दर्शन करते हैं। नट जाति के लोग राजस्थान में अजमेर शरीफ और आगरा में सलीम चिस्ती दरगाह जैसे पवित्र स्थानों पर जाते हैं।

प्राचीन में नट जाति हिंदू धर्म को मानते थे, परंतु सामाजिक बहिष्करण, छुआछूत और जाति प्रथा आदि कुरीतियों के कारण हिंदू धर्म को छोड़कर इस्लाम को अपना लिया और इस्लाम धर्म के रीति-रिवाज के अनुसार धार्मिक गतिविधियों का पालन करने लगे। अर्थात यह कहा जा सकता है अनेक समस्याओं व भेदभाव के कारण नट जाति हिंदू धर्म से इस्लाम धर्म में धर्मांतरित हुए हैं। अध्ययन क्षेत्र जेवल में हिंदू नट और मुस्लिम नट दोनों पाए गए, लेकिन यहाँ के नट अपने धार्मिक क्रिया-कलाप व त्यौहार इस्लाम धर्म के अनुसार करते और मानते हैं। इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र सोन्हौली, कुसुम्ही खुर्द और बसुका ग्राम में क्षेत्र कार्य के दौरान हिंदू और मुस्लिम नट से संबंधित आँकड़ें एकत्रित किया गया है जिसका विवरण चार्ट के माध्यम से प्रदर्शन एवं विश्लेषण निम्नलिखित है-

चार्ट क्रमांक 1.1

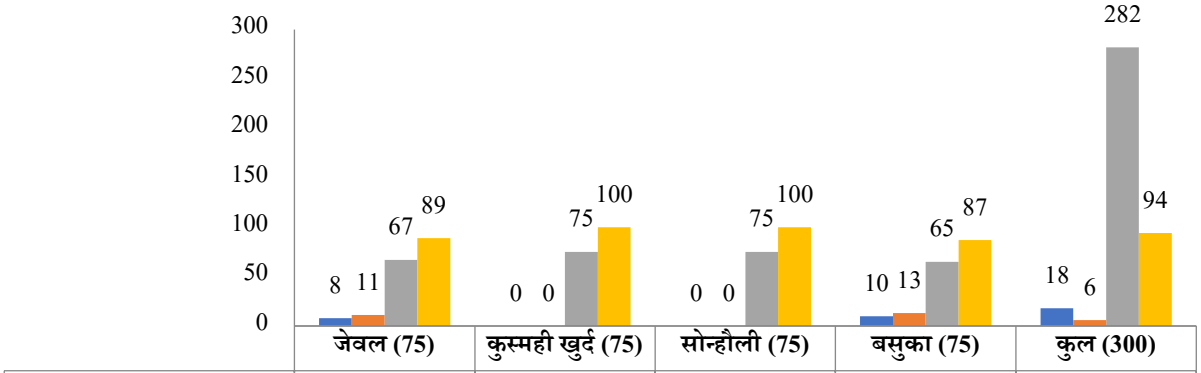

	जेवल (75)	कुस्मही खुर्द (75)	सोन्हौली (75)	बसुका (75)	कुल (300)
हिंदू धर्म (कुल संख्या में)	8	0	0	10	18
प्रतिशत (%)	11	0	0	13	6
इस्लाम धर्म (कुल संख्या में)	67	75	75	65	282
प्रतिशत (%)	89	100	100	87	94

स्रोत -प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित

उपरोक्त चार्ट क्रमांक (1.1) के अवलोकन से स्पष्ट है कि सोन्हौली और कुसुम्ही खुर्द ग्राम में शत प्रतिशत उत्तरदाता इस्लाम धर्म तथा जेवल ग्राम में न्यूनतम 11.0 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू धर्म मनाने की बात स्वीकार किए हैं। अतः अध्ययन से ज्ञात होता है कि सोन्हौली और कुसुम्ही खुर्द में शत प्रतिशत उत्तरदाता मुस्लिम नट है, जो इस्लाम धर्म को मानते हैं। हालांकि अध्ययन क्षेत्र जेवल और बसुका में कुछ नट हिन्दू होने का दावा किए हैं लेकिन उनकी धार्मिक क्रियाकलाप जैसे निकाह,

मेहर, खतना एवं अन्य त्यौहार आदि क्रियाकलाप मुस्लिम रीति-रिवाज के अनुसार किया जाता है। जनगणना 2011 के अनुसार नट जाति उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते हैं जबकि **क्षेत्र दृष्टि** से यह पाया गया कि अध्ययन क्षेत्र में निवास करने वाली नट जाति पिछड़ी जाति में शामिल है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नट जाति में धर्मांतरण के साथ ही इनके समूह या वर्ग में भी परिवर्तन हुआ है।

निष्कर्ष:

नट जाति प्राचीन समय से ही उपेक्षित रही है। जिससे इनका सामाजिक-आर्थिक स्थिति बेहतर न होने के कारण तमाम समस्याओं का सामना करना पड़ा है। सामाजिक भेदभाव के साथ-साथ धार्मिक भेदभाव का दंश झेले है। इसी कारण नट जाति में धर्मांतरण प्रवृत्ति बढ़ी जिससे हिंदू धर्म को छोड़कर मुस्लिम धर्म की तरफ अपना रुख अपनाया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नट जाति सामाजिक आर्थिक स्थिति ठीक न होने कारण हिंदू धर्म में तमाम भेदभाव होने कारण इस्लाम धर्म को माना है जिससे इनके सामाजिक आर्थिक स्थिति में बेहतरी हुआ। अध्ययन क्षेत्र के अवलोकन से यह ज्ञात हुआ है कि प्राचीन में नट जाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रही है लेकिन वर्तमान में कुछ सुधार हुआ है। क्षेत्र दृष्टि से अगर आज भी देखा जाय तो इनके आवास से लेकर भोजन प्रबंध में तमाम दिक्कते देखने को मिलती हैं। इनमें सर्वप्रथम स्थायित्व की समस्या से लेकर आवास व रोटी रोजगार आदि। आज यहाँ तो कल वहाँ। धर्मांतरण भी इनकी सभी समस्याओं का निदान नहीं कर सका है। परंतु इनका मानना है कि सामाजिक भेदभाव से छुटकारा मिला है। अतः यह कहा जा सकता है कि नट जाति आज के वर्तमान समय में पूर्ण रूप से इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिए है।

संदर्भ:

- Alam, Md. Moshabbir. (2018, Jun). Poverty, Inequality and Social Exclusion: Muslim Nat Community in Bihar. *International Journal of Management and Applied Science,* Volume-4, Issue-6, http://iraj.in.
- Alexander, K. C. (1968). *'Soda! mobility m Kerela*. Poona: Deccan college.
- Alexander, K. C. (1977). *The probe of caste in the Christian Churches of Kerela*. in Harjinder, Singh. (ed.) Caste among Non-Hindus in India, Report of General meeting of Catholic Bishops conference of India. pp45-46 65.
- Ambedkar, B. R. (1957). *The Buddha and His Dhamma.* Siddhartha College Publications.

- Ambedkar, Bhim. Rao. (1982). *Why Go For Conversions?. Bangalore: Dalit Sahitya Academy.*
- Antony, Raj. Y. (2001). *Social impact of conversion*. New Delhi: ISPCK publishres.
- Filly, A. (1983). *SO years ®£ Pilgrimage of a coiOT'eart*. Madras: Diocesan press.
- Flugal, J. C. (1945). *'llaa, Morals ami Society; A psydsoAnalytical study*. New York: International university press.
- Gandhi, M. K. (1954). *The Removal of Untouchability* (B. Kumarappa, Ed.). Navajivan Publishing House.
- https://peoplegroupsindia.com/profiles/nat/retrived.14.06.19.http://www.up.gov.in/upmap .aspx https://www.theraigarsamaj.com/nat.php 15.06.2019
- Kumarappa, J. C. (1945). *Christianity: Its Economy and Way of Life.* Navajivan Publishing House.
- Kim, Sebastian. C. H. (2003). *In Search of Identity: Debates on Religious Conversion in India*. New Delhi: Oxford Unversity Press.
- Lobo, Lancy. (1991). *Religious Conversion and Social mobility: A case study of tha Vankars in Centre Gujarat.* Center for Social studies, South Gujrat university, Surat.
- Mandelbaum, D. G. (1970). *Society in India*. Berkely: university of California press.
- Mandelbaum, D. G. (1972). *Social aspects of introduced religions*. Jews, Parsis, Christians/. Vol. 2, Berkely: University of California press, p543- 63.
- Michael, S. M. (1999). *Dalits in Modern India: Vision and Values.* New Delhi: Vistaar Publication.
- Rehman, S. (2016). Being a 'Woman' and a 'Prostitute': The Dark Side of the Reality. *International Research Journal of Social Sciences*, 5(9), 52–57
- Sam, Velladhurai. P. A. (2018). *Religious conversion a case study of pallars religious conversion to islam in madurai district Tamilnadu*. Department of Sociology, University of Madras. http://hdl.handle.net/10603/219051.
- Singh, K. S. (2008). People of India: *Vol. XVI Bihar including Jharkhand, Part one.* Kolkata: Anthropological Survey of India.

- Upadhyaya, P. C. (2015). Nats of Mirzapur: Continuity and culture change. 95. 429-447. https://www.researchgate.net/publication/285603920.
- Wikipedia contributors. Nat (Muslim). In *Wikipedia, The Free Encyclopedia*, 8 june, 2020. Retrieved 04:13, March 1, 2020,
- from https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Nat_(Muslim)&oldid=900920268015. https://www.researchgate.net/publication/285603920.
- Wikipedia contributors. Nat caste. In Wikipedia, The Free Encyclopedia, 23 May 2020. Retrieved 18:18, September 28, 2020, from
- https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Nat_caste&oldid=898421616.
- क्रुक, डब्ल्यू. (1986). *द ट्राइब्स एंड कास्ट ऑफ द नॉर्थ-वेस्टर्न इंडिया. कलकत्ता: गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस.* वाल्यूम चतुर्थ. दिल्ली : कास्मों प्रकाशन.
- त्रिपाठी, अरुण. कुमार. (1994). (सं.). *राजकिशोर, हरिजन से दलित.* नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
- दईया, पीयूष. (2002). *लोक.* राजस्थान : प्रकाशक भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर.
- नट. विक्षनरी, आझाद ज्ञानकोष, 21 मई,2020.
- https://hi.wiktionary.org/w/index.php?title=%E0%A4%A8%E0%A4%9F&oldid=457308 से अभिगमन 18:02, सितम्बर 28, 2024 को.
- रसेल, आर. बी. (1916). *ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ सेंट्रल प्राविंसेज ऑफ इंडिया.* लंदन : मैकमिलन.
- रिजले, एच. एच. (1891). *ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ बंगाल इथनोग्राफिक ग्लासरी.* कलकत्ता.
- सिंह, पी. एन. (2009). *अम्बेडकर चिंतन और हिन्दी दलित साहित्य.* पंचकुला : आधार प्रकाशन.
- Yadav, Y. (1999). Electoral politics in India: The rise of the third electoral system. Economic and Political Weekly, 34(34/35), 2393–2399.